# संवाद

बच्चे अपने परिवेश में अनेक प्रकार के अनुभवों को ग्रहण करते हुए पलते और बढ़ते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ने का समर्थन करती है, बाल-केंद्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ अपनाने पर बल देती है तथा विभिन्न कौशलों का विकास करते हुए ज्ञान सृजन करने की बात कहती है। शिक्षा के इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षकों की भूमिका अहम हो जाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में आज अनेकों नवाचार हो रहे हैं। शिक्षक, सेमिनार, कॉन्फ्रेंस, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि में भाग लेकर स्वयं को सामयिक बनाए रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके यह प्रयत्न सराहनीय हैं। अपने द्वारा किए गए प्रयासों को, वे दूसरों के साथ विभिन्न माध्यमों द्वारा, जैसे — सोशल मीडिया, पत्रिकाओं इत्यादि के द्वारा साझा भी कर रहे हैं।

हमारे इस अंक में भी शिक्षकों द्वारा किए गए कुछ ऐसे ही प्रयास, विचार, लेख, जैसे — समावेशी शिक्षा, विद्यालय प्रबंधन समिति, संगीत की शक्ति, भावात्मक विकास, बाल-केंद्रित शिक्षा, सोशल मीडिया का प्रयोग, शिक्षकों की जवाबदेही, आदि शामिल हैं।

आशा है यह अंक आपको पसंद आएगा। आप भी पत्रिका के लिए लेख भेज सकते हैं। लेखकों के लिए दिशा-निर्देश पत्रिका के अंत में दिए गए हैं। पत्रिका में सुधार हेतु आप हमें अपने सुझाव भेज सकते हैं।

*अकादमिक संपादक*